International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
July –August 2017, Volume-4, Issue-4 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण जागरूकता

Dr. Liladhar Soni
Lecturer in Sociology
SPC Government College, Ajmer

सार

भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रखती है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण से जुड़े हुए सभी अंगों जैसे जल स्रोतों, वायु, पेड़-पौधों, पहाड़ों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों इत्यादि के साथ हमारी परंपराओं, प्रथाओं और रीति-रिवाजों को जोड़ा गया तथा इनके महत्व को स्थापित किया गया साथ ही साथ इन प्राकृतिक तत्वों के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास भी किया गया। इस प्रकार हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन में इन सभी को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान भारतीय संस्कृति में दिया गया है। भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए जितने भी धार्मिक साहित्य हैं उन सब में भी पर्यावरण, पशु-पक्षी, जल स्रोतों इत्यादि के संरक्षण से जुड़े हुए रीति रिवाज और परंपराएं देखने को मिलती है।

कुंजी शब्द: पर्यावरण, भारतीय संस्कृति, परंपराएं, संरक्षण

सभ्यता का विकास और मानव इतिहास प्रकृति से पूरी तरीके से जुड़े हुए रहे हैं, सभ्यता के विकास का इतिहास सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच अंत: क्रिया के द्वारा विकसित हुआ है। ग्रिफिथ टेलर के अनुसार पर्यावरणीय नियंत्रण की उपेक्षा नहीं की जा सकती लेकिन इसके द्वारा निर्धारित सीमाओं में भी नहीं बांधा जा सकता है। राधा कमल मुखर्जी कहते हैं कि परिस्थितिकी अवस्थाओं और शक्तियों के साथ मानव अनुकूलन के तीन स्तर है, प्रथम स्तर प्राचीन काल में ज्ञान और विज्ञान के अल्प विकास के कारण समुदाय के लोग पर्यावरण पर अत्यधिक निर्भर थे। द्वितीय स्तर मनुष्य ने पर्यावरण के साथ अपने संरक्षण, भोजन, आवास आदि संबंधित विभिन्न आवश्यकताओं का तार्किक एवं क्रमबद्ध अनुकूलन किया। तृतीय स्तर इसका संबंध आज के व्यवहारिक परिस्थितिकी विज्ञान से है, इसके अनुसार मानव प्रकृति का दास ना होकर एक सहयोगी है और वह इस में छिपी असीमित संभावनाओं को खोज करके उनका उपयोग मानव कल्याण में उन्नति के लिए कर सकता है। पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भारतीय संस्कृति में अति प्राचीन काल से देखी जा सकती है, हमारे प्रत्येक रीति रिवाज जो जन्म से लेकर मृत्यु तक अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं उन सभी में हम यह पाते हैं कि पशु-पक्षी, प्रकृति, जीव-जंतुओं, जल स्रोतों के प्रति बड़ा ही संवेदनशील और संरक्षण का भाव देखने को मिलता है। भारत में हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति में जीवन से जुड़ी हुई सभी परंपराओं में प्राकृतिक जल स्रोतों, पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को परंपराओं और संस्कारों के साथ जोड़ा गया है ताकि आम व्यक्ति अपने आसपास के प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जागरूक तथा संवेदनशील हो सके और इनके संरक्षण का भाव उसके मन में बचपन से ही आ जाए।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःखभाग भवेत॥
उपरोक्त वाक्य भारतीय संस्कृति का एक आदर्श वाक्य और भाव उद्घोष माना जाता है इसके अनुसार भारतीय संस्कृति में सभी के कल्याण की कामना की गई है और यह प्रार्थना की गई है कि सभी सुखी रहें, रोग मुक्त रहें. मंगलमय कार्यों के साक्षी बने और किसी को भी दुख का भागी न बनना पड़े। यह मंत्र भारतीय सांस्कृतिक विरासत और सोच को दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति में सभी के सुख ही रहने और निरोग रहने की मंगल कामना के साथ-साथ यह भी कामना की गई है कि सभी का कल्याण हो और किसी को भी कोई दुख नहीं देखना पड़े। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि आम व्यक्ति तभी निरोगी रह सकता है जबकि वह प्रकृति के ज्यादा नजदीक हो और प्राकृतिक संसाधनों के और वनस्पतियों के उचित उपयोग को जाने और उनके प्रति संवेदनशील भी रहे।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में हम अत्यंत तेजी से विकास की ओर अग्रसर है समय-समय पर टेक्नोलॉजी बदलती रहती है, सुख सुविधाओं के साधन बढ़ रहे हैं, यातायात और संचार के साधनों में क्रांतिकारी बदलाव हो रहे हैं किंतु यह भी सत्य है कि वर्तमान विकास जिसे वैज्ञानिक विकास कहा जाता है और जिसे तकनीकी विकास भी कहा जा सकता है वह प्रकृति के शोषण और अत्यधिक दोहन पर आधारित है जो प्राकृतिक स्रोतों और प्राकृतिक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा कर किया जा रहा है जिसके घातक परिणाम के रूप में हम पाते हैं कि ग्लेशियर्स की बर्फ पिघल रही है वन क्षेत्र और पेड़ सीमित होते जा रहे हैं सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं और सुनामी जैसी आपदाएं निरंतर बढ़ती जा रही है और ओजोन परत निरंतर रूप से क्षतिग्रस्त होती जा रही है। हमारे द्वारा चलाए जा रहे हैं प्रदूषण का परिणाम है कि समुद्री जीवो में से कई का अस्तित्व संकट में है बहुत सी प्राकृतिक वनस्पतियां सीमित होती जा रही है, वन क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं और पेयजल भी गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। इन सब चुनौतियों के बीच में हम यह पाते हैं कि इनका कारण आधुनिक विकास है जो की प्रकृति को साथ लेकर नहीं चल रहा है बल्कि प्रकृति के शोषण पर आधारित है किंतु जब हम भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपराओं और प्रथाओं को देखते हैं तो अत्यंत सुखद रूप से हम यह बातें हैं कि प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परंपराएं-प्रथाएं पर्यावरण संरक्षण के लिए अपना अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देती है और आम व्यक्ति को बहुत ही सरल तरीके से प्रकृति, पशु-पक्षी, जल स्रोतों और वायु की शुद्धता के साथ जोड़ती है तथा प्राकृतिक स्रोतों और प्रकृति का सम्मान कराना सिखाती है। यहा वैज्ञानिक और अनुभव सिद्ध सिद्धांतों से आम जनता को जोड़ने के लिए उन्हें परंपराओं के साथ जोड़ा गया तथा परंपराओं का एक अनिवार्य हिस्सा बनाकर ऐसे अनेक रीति रिवाज और संस्कार प्रचलन में लाए गए जो कि पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। हमारे विभिन्न पुराणों, वेदों तथा अन्य सनातन साहित्य में वृक्षारोपण को अत्यंत कल्याणकारी और महत्वपूर्ण बताया गया है। कुओं तथा तालाबो के निर्माण को पवित्र और महत्वपूर्ण बनाने के लिए धार्मिक मान्यताओं के साथ और धार्मिक परंपराओं के साथ जोड़ा गया ताकि व्यक्ति अपने जीवन में कुआं और तालाब बना कर जनकल्याण में सहभागिता दे सके इसी के साथ साथ नदियों तालाबों और कुओं के जल को शुद्ध बनाए रखने के लिए अनेक मान्यताएं और परंपराएं तथा धार्मिक सामाजिक नियम हमें भारतीय संस्कृति में और जीवन मूल्यों में दिखाई देते हैं। हमारे वेदों, गीता, महाभारत, रामायण, पुराणों और स्मृतियों में प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों

के प्रति सम्मान प्रदर्शन के संदर्भ में अनेकों परंपराओं तथा सामाजिक सांस्कृतिक नियमों की व्यवस्था है। तुलसी जैसे औषधीय पौधे की पत्तियों के सेवन को
मंदिरों में चरणामृत के साथ वितरित किया जाता है ताकि व्यक्ति इनका सेवन करके निरोगी रह सके। तुलसी में जल से चढ़ाने का महत्व भारतीय संस्कृति में अत्यधिक है, हर घर में तुलसी का पौधा लगाने को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्व दिया गया है। गाय की पूजा भारतीय सनातन परंपरा का एक अनिवार्य अंग है इसके साथ ही सभी देवताओं के वाहन पशु और पक्षी के रूप में है जैसे भगवान शिव का वाहन नंदी, भगवान इंद्र का वाहन एरावत हाथी, माता दुर्गा का वाहन शेर इत्यादि। वृक्षों को भी अत्यधिक महत्व दिया गया है गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि वृक्षों में मैं पीपल हूं। इसी प्रकार वर्ष भर के अनेक व्रत ऐसे हैं जिसमें वृक्षों की पूजा करके व्रत को पूर्ण किया जाता है जैसे आंवला नवमी के दिन आंवले की पूजा, वट वृक्ष की पूजा, अमावस के दिन पीपल की पूजा की जाती है। मत्स्य पुराण में जल स्रोतों और वृक्षों के महत्व को दर्शाते हुए एक श्लोक है-

दस कूप समा वापी,दस वापी समो हद:

दस हद सम: पुत्रो, दस पुत्र समो दुम:

मतस्य:पुराण के इस श्लोक में जल स्रोतों के साथ-साथ पेड़ की महत्ता बताई गई है। श्लोक के अनुसार 10 कुओं को खुदवाने जितना फल एक बाबड़ी में, 10 बाबड़ी को खुदवाने जितना फल एक तालाब, 10 तालाब खुदवाने जितना फल एक युगी पुत्र और 10 युगी पुत्रों के बराबर फल एक वृक्ष को तैयार करने में मिलता है। इस श्लोक में जल स्रोतों को खुदवाने और बनवाने के महत्व और वृक्षारोपण के महत्व को दर्शाया गया है यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि स्थानीय निवासियों को जल और वृक्षों की छाया मिल सके साथ ही बाहर से आने वाला पथिक भी प्यासा न रहे और वृक्ष की छाया में विश्राम कर सके। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी यह महत्वपूर्ण है क्योंकि जल स्रोतों और वृक्षों से ही पर्यावरण का संरक्षण संभव है।
केवल जल स्रोतों के निर्माण और वृक्षारोपण का महत्व ही नहीं बताया गया है बल्कि हमारे शास्त्रों में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि हमारी वैदिक और शास्त्रीय परंपराएं जल स्रोतों की पवित्रता और वृक्षों के सरंक्षण को अत्यधिक महत्व देती है।। मार्कंडेय पुराण में एक श्लोक है "नाम्सु मूत्रं पुरिषुं वा मैथुनं वासमाचरेत् ।।" अर्थात जल के भीतर मल मूत्र और मैथुन नहीं करना चाहिए इसके पीछे भावार्थ यह है कि जलस्रोत अपवित्र बने रहे जिससे इस जल का उपयोग करने वाले व्यक्ति निरोगी रहे इसी प्रकार महाभारत में एक श्लोक है "पर्वकाले तु संप्राप्ते यौ वै च्छेदनभेदनम्। करिष्यति नरो मोहता तमेषानुगमिष्यति।।" अर्थात सक्रांति, ग्रहण, पूर्णिमा अमावस्या आदि पर्व काल प्राप्त होने पर जो मनुष्य वृक्ष, तृण और औषधियों का भेदन-छेदन करता है उसे ब्रह्म हत्या लगती है। तो इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति और वैदिक परंपराएं पर्यावरण संरक्षण अर्थात जल, भूमि, वायु और वृक्षों के संरक्षण तथा अन्य प्राकृतिक स्रोतों और प्रकृति के संरक्षण के प्रति बड़ी संवेदनशील रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 आर के गुर्जर, बीसी जाट, हुमन ज्योग्राफी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2003, पृष्ठ संख्या 82
2 डीडी शर्मा. सामाजिक विचारक. साहित्य भवन प्रकाशन. 2007. पृष्ठ संख्या 214
3 मत्स्य पुराण
4 श्रीमद्भगवद्गीता
5 मार्कंडेपुराण, 34\24 खंड 1, संपादक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब (वेद नगर) बरेली, उत्तर प्रदेश, वर्ष 1971
6 महाभारत, शांति पर्व, 282/412 गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2045 पृष्ठ संख्या 5158